शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

# केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. बृज सुन्दर गौतम
सह-आचार्य, शिक्षा संकाय
जवाहर लाल नेहरू स्नातकोत्तर शिक्षक
सीमा बैरवा (शोधार्थी)
शिक्षा संकाय
कोटा विश्वविद्यालय
कोटा , राजस्थान, भारत

## शोध संक्षेप

*शैक्षिक अभिवृत्ति व्यक्ति की शिक्षा और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण, मनोभाव और झुकाव को दर्शाती है। यह अभिवृत्ति किसी व्यक्ति की शिक्षा के महत्व, उसकी उपयोगिता और इसे अपनाने के प्रति विचारों को प्रभावित करती है। शैक्षिक अभिवृत्ति समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत अनुभवों से गहराई से जुड़ी होती है। शिक्षा प्रत्येक विद्यार्थी के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। केन्द्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय भारत में शिक्षा प्रणाली के दो प्रमुख संस्थान हैं, जो विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य इन दोनों संस्थानों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन में शैक्षिक अभिवृत्ति को विभिन्न आयामों जैसे- शिक्षकों के प्रति दृष्टिकोण, अध्ययन के प्रति रूचि, सहपाठियों के साथ संबंध, विद्यालय के वातावरण और शैक्षिक प्रोत्साहन के संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। डेटा संग्रह के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी का उपयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा नीति निर्माताओं और स्कूल प्रशासकों को इन संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर बनाने के लिए सुझाव प्रदान करते हैं। यह अध्ययन विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का समझने और उनके विकास को दिशा देने में सहायक सिद्ध हो सकता है।*

**बीज शब्द** : *शैक्षिक अभिवृत्ति, शैक्षिक प्रोत्साहन, शैक्षिक प्रदर्शन, मनोभाव, संस्कृति, तुलनात्मक, विश्लेषण।*

## प्रस्तावना

शैक्षिक अभिवृत्ति व्यक्ति की शिक्षा और शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण, मनोभाव और झुकाव को दर्शाती है। यह अभिवृत्ति किसी व्यक्ति की शिक्षा के महत्व, उसकी उपयोगिता और इसे अपनाने के प्रति विचारों को प्रभावित करती है। शैक्षिक अभिवृत्ति समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत अनुभवों से गहराई से जुड़ी होती है। इसके अन्तर्गत शिक्षक, छात्र और अभिभावकों की शिक्षा के प्रति सोच, शिक्षण विधियों को अपनाने की क्षमता और शैक्षिक विकास में भागीदारी शामिल है। सकारात्मक शैक्षिक अभिवृत्ति व्यक्ति को न केवल ज्ञान अर्जित करने में सहायता करती है, बल्कि उसे जीवन में बेहतर निर्णय लेने और

समस्याओं का समाधान ढूँढने में सक्षम बनाती है। समाज और राष्ट्र के समग्र विकास में शैक्षिक अभिवृत्ति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण छात्रों में आत्मविश्वास, रचनात्मक और नवाचार को बढ़ावा देता है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक है। शैक्षिक अभिवृत्ति न केवल शिक्षा प्राप्ति को प्रभावित करती है बल्कि यह व्यक्ति और समाज के समग्र विकास के लिए भी अत्यन्त आवश्यक है। इसे बढ़ावा देने के लिए जागरूकता, प्रेरणा और उचित संसाधनों का प्रावधान अनिवार्य है।

## शोध समस्या का औचित्य

शैक्षिक दृष्टिकोण विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन, सीखने की क्षमता और उनके व्यक्तित्व विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। केन्द्रीय विद्यालय और नवोदय विद्यालय, भारत के दो प्रमुख शैक्षिक संस्थान है, जो अपनी विशिष्ट शैक्षिक पद्धतियों और उद्देश्य के लिए जाने जाते है। इन विद्यालयों के विद्यार्थियों का शैक्षिक दृष्टिकोण, उनके शैक्षिक अनुभव और व्यक्तिगत विकास के प्रति उनकी सोच को दर्शाता है।

केन्द्रीय विद्यालय केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालित हैं, जो मुख्य रुप से शहरी और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में स्थित है। नवोदय विद्यालय ग्रामीण प्रतिभाओं के विकास के उद्देश्य से स्थापित किए गए हैं। इन दोनों विद्यालयों की संरचना, संसाधन और शिक्षण पद्धतियों में भिन्नता होती है। इन कारणों से यह जानना आवश्यक है कि इन संस्थानों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति किस प्रकार से भिन्नसमान है। इसलिए शोधकर्ता ने इस क्षेत्र से सम्बन्धित शोध समस्या का चयन किया है।

## समस्या कथन

केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

## शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

5. शोध की परिकल्पना

1. केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

भारत

1 डॉ. विष्णु शर्मा (2020) ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का उनके अधिगम, चिन्तन, शैली एवं सृजनात्मकता के संदर्भ में अध्ययन।

निष्कर्ष : इस शोध कार्य के निष्कर्ष से अध्यापकों को यह मार्गदर्शन मिलेगा कि वह अपने विद्यार्थियों की अधिगम चिंतनशैली को पहचानने का प्रयास करेंगी तथा अध्ययन करवाते समय बालकों की अधिगम चिंतन शैली को जानकर विषयवस्तु प्रदान करेंगे जिसके फलस्वरूप बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च होगा।

सृजनशील बालकों को शिक्षक अधिक रचनात्मक कार्य देने के लिए प्रेरित होंगे। इस शोध कार्य से बालकों में आत्मविश्वास बढ़ेगा।

2. लखन लाल बोहने (2020) ''अधिगम शैली, लिंग एवं इनकी अंतक्रिया का कक्षा-आठवीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष : विद्यार्थियों की अधिगम शैली का उनकी हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया जबकि लिंग का हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव पाया गया। परन्तु अधिगम शैली एवं लिंग की अंतक्रिया का विद्यार्थियों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

3. गोविन्द एवं अरमान अली (2021), ''विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का समीक्षात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष : शिक्षा मनोविज्ञान विषय के क्षेत्र में विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति के अध्ययन से संबंधित शोधकार्य तो हुए है लेकिन अध्ययन एवं ज्ञान के दृष्टिकोण से वह पर्याप्त नहीं है।

विदेश

1. टोपला, अ. (2014), इंटरनेशनल जर्नल आफ क्रिएटिव रिसर्च ने वयस्क छात्रों का शिक्षण अधिगम व शिक्षण संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया।

निष्कर्ष : वयस्क छात्रों का शिक्षण अधिगम व शिक्षण संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति में कोई भी अंतर नहीं पाया गया।

2. बाबल जे. (2017), ''अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ अनुप्रयुक्त रिसर्च ने सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं कम्प्यूटर अभिवृत्ति का अध्ययन।

निष्कर्ष : सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं कम्प्यूटर अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया।

## शोध विधि

प्रस्तुत शोध के अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

## अध्ययन हेतु जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में जनसंख्या के रूप में हाड़ौती क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कक्षा 6-12 वीं तक के समस्त विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

## न्यादर्श चयन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जो कि यादृच्छिक विधि के माध्यम से किया गया है।

## शोध उपकरण

स्वनिर्मित शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी।

## सांख्यिकीय विधियाँ

शोध समस्या की प्रकृति अनुसार उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जायेगा।

1 मध्यमान।

2 प्रामाणिक विचलन

3 टी-परीक्षण

## शोध अध्ययन का परिसीमन

शोधकर्ता द्वारा समय, धन तथा श्रम की उपयुक्तता को ध्यान में रखते हुए अपना शोधकार्य केवल हाड़ौती क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया है तथा अपना शोध कार्य पूर्ण करने के लिए हाड़ौती क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले कक्षा 6-12वीं तक के 400 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

## प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या

उद्देश्य : केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना

परिकल्पना -1 ''केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1.1

केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति की तुलना का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी-मान-

| क्र.सं. | समूह | पदों की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी-मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1- | केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थी | 200 ($N_1$) | $M_1$=456.92 | 61-80 | 2-66 | सार्थक अन्तर है |
| 2- | नवोदय विद्यालय के विद्यार्थी | 200 ($N_2$) | $M_2$ =440.08 | 64-42 | | |

स्वतंत्रता की कोटि (df) का मान = $N_1$ + $N_2$ & 2

200+200-2 = 398

df का मान 398 पर 0.05 एवं 0.01 महत्त्वशीलता स्तर का मान क्रमशः 1.96 व 2.59 है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त सारणी संख्या 1.1 का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 456.92 एवं 440.08 तथा प्रामाणिक विचलन क्रमशः 61.80 एवं 64.42 है। टी-परीक्षण द्वारा मध्यमानों की सार्थकता का परीक्षण करने पर इस समूह का टी-मान 2.66 प्राप्त हुआ है, जो स्वतन्त्रता की कोटि 398 के 0.05 एवं 0.01 महत्वशीलता स्तर के मान क्रमशः 1.96 एवं 2.59 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।'' को अस्वीकार किया जाता है।

उद्देश्य - 2 केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

उद्देश्य - 4 नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना - 2 ''केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या - 1.2

केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति की तुलना का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी-मान -

| क्र.सं. | समूह | पदों की संख्या | मध्यमान | प्रामाणिक विचलन | टी-मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थी | 111 ($N_1$) | $M_1$=460.97 | 60-87 | 0-76 | सार्थक अन्तर नहीं है |
| 2 | नवोदय विद्यालय के विद्यार्थी | 130 ($N_2$) | $M_2$ =466.74 | 53-94 | | |

स्वतंत्रता की कोटि (df) का मान = N1 + N2 & 2

111+130-2=239

df मान 239 पर 0.05 एवं 0.01 महत्वशीलता स्तर का मान क्रमशः 1.96 व 2.59 है।

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपर्युक्त सारणी संख्या 1.2 का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों का मध्यमान क्रमशः 460.97 एवं 466.74 है तथा प्रामाणिक विचलन क्रमशः 60.87 एवं 53.94 है। टी-परीक्षण द्वारा मध्यमानों की सार्थकता का परीक्षण करने पर इस समूह का टी-मान 0.76 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता की कोटि 239 के 0.05 एवं 0.01 महत्वशीलता स्तर के मान 1.96 व 2.59 से कम है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' को स्वीकार किया जाता है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2025
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उद्देश्य- 3 केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना। उद्देश्य -10. नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पना - 6 केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या -1.3

केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों की छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति की तुलना का मध्यमान प्रमाणिक विचलन एवं टी-मान :

| क्र. सं. | समूह | पदों की संख्या | मध्यमान | प्रामाणिक विचलन | टी-मान | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | केंद्रीय विद्यालय की छात्राएं | 89 ($N_1$) | $M_1$=423 | 55-3 | 3-27 | lkFkd vUrj g |
| 2 | नवोदय विद्यालय की छात्राएं | 70 ($N_2$) | $M_2$ =451.56 | 53-94 | | |

स्वतंत्रता की कोटि ¼df½ का मान = $N_1 + N_2$ & 2

89+70-2=157

df का मान 157 पर 0.05 एवं 0.01 महत्वशीलता स्तर का मान क्रमशः 1.96 एवं 2.59 है।

विश्लेषण एवं व्याख्या - उपर्युक्त सारणी संख्या 3.1 का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 423 एवं 451.56 है तथा प्रमाणिक विचलन क्रमश: 55.3 एवं 53.94 है। टी-परीक्षण द्वारा मध्यमानों की सार्थकता का परीक्षण करने पर इस समूह का टी-मान 3.27 प्राप्त हुआ है, जो कि स्वतंत्रता की कोटि 157 के 0.05 एवं 0.01 महत्वशीलता स्तर के मान 1.96 एवं 2.59 से अधिक है। इसलिए शून्य परिकल्पना "केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक अभिव्यत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।" को अस्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष

1. शून्य परिकल्पना 0.05 एवं 0.01 महत्वशीलता स्तर पर स्वीकार की जाती है, क्योंकि केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

2. शून्य परिकल्पना 0.05 एवं 0.01 महत्वशीलता स्तर पर अस्वीकार की जाती है, क्योंकि केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

3 शून्य परिकल्पना 0.05 एवं 0.01 महत्वशीलता स्तर पर अस्वीकार की जाती है, क्योंकि केन्द्रीय विद्यालयों एवं नवोदय विद्यालयों में अध्ययन करने वाली छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

15. शैक्षिक निहितार्थ - शैक्षिक अभिवृत्ति व्यक्ति की शिक्षा सीखने और शिक्षण की प्रक्रिया को समझने और उसे विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शैक्षिक अभिवृत्तिदृष्टिकोण केवल ज्ञान प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास, उनकी रचनात्मकता और सामाजिक-भावनात्मक कौशल को बढ़ावा देने का कार्य करता है।

शैक्षिक अभिवृत्ति के शैक्षिक निहितार्थ शिक्षा प्रणाली में अपनायी जाने वाली विधियों, शिक्षण सामग्री शिक्षकों की भूमिका और विद्यार्थियों की भागीदारी में प्रकट होते हैं। यह दृष्टिकोण सीखने की प्रक्रिया को अधिगम केन्द्रित, छात्र-केन्द्रित और व्यावहारिक बनाने में सहायक होता है। साथ ही, यह शिक्षा में समावेश, समानता और नवीनता को बढ़ावा देता है।

अतः शैक्षिक अभिवृत्ति के शैक्षिक निहितार्थ विद्यार्थियों की क्षमता रुचि और आवश्यकता को समझते हुए उन्हें एक सशक्त, जागरुक और समाजोपयोगी नागरिक बनाने की दिशा में योगदान देते हैं।

## शोध सुझाव :

शैक्षिक अभिवृत्ति के क्षेत्र में गहन अध्ययन और शोध हेतु निम्नलिखित सुझाव उपयोगी हो सकते है।

1. विभिन्न सांस्कृतिक समूहों का अध्ययन - विभिन्न सांस्कृतिक सामाजिक और आर्थिक पृष्ठ भूमियों के व्यक्तियों की शैक्षिक अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि सांस्कृतिक और भौगोलिक कारक अभिवृत्ति को कैसे प्रभावित करते हैं।

2. डिजिटल युग में शैक्षिक अभिवृत्ति - डिजिटल प्लेटफार्म, ई-लर्निंग और ऑनलाईन शिक्षा का छात्रों और शिक्षकों की अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

3. शिक्षक -छात्र संबन्ध और अभिवृत्ति - शिक्षक और छात्रों के आपसी संबंधों का अध्ययन किया जा सकता है कि यह छात्रों की शैक्षिक अभिवृत्ति को किस हद तक प्रभावित करता है।

4. अभिवृत्ति पर माता-पिता का प्रभाव - माता -पिता की शिक्षा, उनकी आर्थिक स्थिति और उनके दृष्टिकोण का बच्चों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।

5. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन - ग्रामीण और शहरी छात्र-छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में अन्तर का अध्ययन एक महत्वपूर्ण शोध विषय हो सकता है।

6. नई शिक्षा नीति का प्रभाव - नई दिशा नीति-2020 के लागू होने के बाद शिक्षकों व छात्र-छात्राओं की शैक्षिक अभिवृत्ति में हुए बदलावों का अध्ययन किया जा सकता है।

7. प्रयोगात्मक अनुसंधान - शैक्षिक अभिवृत्ति को सुधारने या सकारात्मक दिशा में बदलने के लिए विभिन्न तकनीकों और पद्धतियों का प्रयोगात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

इन सभी क्षेत्रों में शोध से शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने और विद्यार्थियों की सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने में सहायता मिल सकती है।

## सन्दर्भ सूची

1 गुप्ता, आर. कृत,(2023), "शिक्षण अभिरुचि एवं शिक्षण अभिवृत्ति" त्च्भ् ए रमेश पब्लिकेशन हाउस जयपुर पृसं. 21

2. गुप्ता, आर. (2024) Teaching Aptitude Teaching Attitude" RPH Publication Board, Jaipur, P.No. 45

3 मीना, दीपक (2024), "शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षाशास्त्र कव्या पब्लिकेशन

4 प्रताप, नरेश (2022), "शिक्षण अभिरुचि एवं अभिवृत्ति परीक्षण अरिहंत प्रकाशन जयपुर

5 माथुर डॉ. एस.एस.,(2023) "शिक्षा मनोविज्ञान" अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-2

6 श्रीमती आर.के.दुबे श्रीकृष्ण दुबे(2024) "शिक्षा समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा.लि. आगरा "शिक्षा के समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार

7 शर्मा, श्रीमती आर.के., दुबे श्रीकृष्ण, शर्मा, हरिशंकर, (2022), "शिक्षा के समाज शास्त्रीय एवं दार्शनिक आधार

8 Sharma, R.A शिक्षा और मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

9ण् मंगल, डॉ. अंशु, बरोलिया डॉ. ए., अग्रवाल, सिंह श्रीमती नीतु "शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ एवं शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मन्दिर (प्रा.लि.) आगरा

## जर्नल

1 International Journal of Education and science Research Review volume-1,Issue-1 Feb.2014

2 International Journal of Research e- ISSN : 2348-6848 volume - 04 Issue-12]sept. 2017

3. भारतीय आधुनिक शिक्षा NCERT

4 JETIR March 2019, Volume 6, Issue 3 www.jetir.org (ISSN-2349-5162)

5 Shikshan Sanshodhan :Jouranl of Arts, Humanities and social science Bi-monthly, Peer-Reviewed, ISSN:2581-6241, Volume-3, ISSUE-1, Jan-Feb:2020

6 Scholarly Research Journal for Interdisiplinary Studies, online ISSN-2278-8808-7.380, PEER Reviewed & Refereed Journal May-June, 2021 Vol.8/65

## पत्रिकाएं

1 मुक्त विद्यालयी शिक्षा, अभिवृत्ति समस्याऐं और समाधान

2 गुंजार (गूँज हिन्दी में), शैक्षिक ई-पत्रिका

3 सच्ची शिक्षा (मासिक पत्रिका) दिसम्बर 2024